रजिस्ट्री सं० डी०—(डीएन)—128/90

REGISTERED NO. D—(DN)—128/90

# भारत का राजपत्र
# The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 16] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 21, 1990 (वैशाख 1, 1912)

No. 16] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 21, 1990 (VAISAKHA 1, 1912)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

## विषय-सूची


| | पृष्ठ |
|---|---|
| भाग I—खण्ड 1—रक्षा मंत्रालय को छोड़कर भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों, संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं | 311 |
| भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं | 455 |
| भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं | — |
| भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं | 493 |
| भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम | * |
| भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ | * |
| भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं) | * |
| भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं | * |
| भाग II—खण्ड—3—उप-खण्ड (iii) भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल हैं) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) | * |
| भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश | * |
| भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं | 407 |
| भाग III—खण्ड 2—पेटन्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस | 411 |
| भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं | * |
| भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं | 1457 |
| भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी, निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस | 53 |
| भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को निभाने वाला अनुपूरक | * |


*अलग से प्राप्त नहीं।

# CONTENTS


| | PAGE |
|---|---|
| PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court. | 311 |
| PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court . . . . . | 455 |
| PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . . . | — |
| PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence . . . . . | 493 |
| PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . . | * |
| PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations . . . . . | * |
| PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) | * |
| PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories) . . . | * |
| PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . . | * |
| PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India . . . . . | 407 |
| PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs . . . . . | 411 |
| PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . . | * |
| PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies . . . . . | 1457 |
| PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies . | 53 |
| PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi | * |


*Folio Nos. not received.

# भाग I—खण्ड 1

# [PART I--SECTION 1]

## (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

## [Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 28 मार्च, 1990

सं० 22-प्रेज०90:—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. श्री शिव कुमार रजक (मरणोपरान्त)
मोहल्ला दायगाटू,
थाना—मांगो,
जमशेदपुर, जिला सिंहभूम,
बिहार।

दिनांक 28 अगस्त, 1988 को स्वर्ण रेखा नदी में स्नान करते हुए श्री शिव कुमार रजक ने देखा कि पांच लड़के नदी की बीच धार में डूब रहे हैं। श्री रजक, अपनी जान की परवा किये बिना तुरन्त उफनती नदी में कूद पड़े और चार लड़कों को बचा लिया। पांचवें लड़के की जान बचाते हुए वह स्वयं नदी में डूब गये।

श्री शिव कुमार रजक ने चार लड़कों की जाने बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया और इस प्रक्रिया में उन्होंने अपनी जान गवा दी।

2. श्रीमती रंजनबेन देवजी भाई चौथानी
मार्फत श्री देव जी केशवजी चौथानी जयन सोसायटी,
50 फुट रोड साइड के निकट,
विनेश पावर लाण्ड्री के सामने,
राजकोट—2

दिनांक 16 जुलाई, 1988 को जब श्रीमती रंजनबेन अपने दो पुत्रों और एक पुत्री के साथ अपने घर वापिस जा रही थी तो वह पांच ग्राम वासियों के साथ भारी वर्षा के कारण फंस गई। शीघ्र ही सारा गांव वर्षा के पानी में डूब गया और ग्राम वासियों की जानें खतरे में पड़ गई इस पर श्रीमती चौथानी ने अपनी साड़ी उतार कर दूसरे लोगों को दे दी ताकि वे साड़ी की सहायता से एक तालाबस्थ घर की छत पर चढ़ जाएं। छत पर चढ़ने के पश्चात् उन कृपन लोगों ने असहाय महिला और उसके बच्चों को संकट में छोड़ दिया। उसने अपने दोनों पुत्रों को कन्धों पर चढ़ाकर और अपन पुत्री को लेकर छत पर चढ़ने की कोशिश की लेकिन दुर्भाग्य वश उसका सन्तुलन बिगड़ गया और दोनों लड़के पानी में गिरकर डूब गये। सहायता के लिये उसकी सारी चीख पुकार किसी ने नहीं सुनी। उसने पास की एक झाड़ी में आश्रय लिया और रात रोते रोते व्यतीत की। सबेरा होने पर एक धोबी ने उसकी चीखें सुनी और उसे तथा उसकी पुत्री को बचाया।

श्रीमती रंजन बेन ने पांच व्यक्तियो की जाने बचाकर अदम्य साहस और मानव जीवन के प्रति अपने प्रेम का परिचय दिया और इसी प्रक्रिया में अपने दो पुत्रों को खो दिया।

सं० 23-प्रेज०90:—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

(1) कुमारी राजकुमारी देवी
पुत्री श्री चरण पासवान,
ग्राम सन्हा,
थाना साहिबपुर कमल,
जिला बगुसराय बिहार,

11 अगस्त, 1988 को कुमारी राजकुमारी देवी एक देसी नौका में बैठकर सन्हा गांव के निकट एक बाढ़ ग्रस्त नदी पार कर रही थी कि अचानक नौका उलट गई। वह किसी तरह नदी के तट पर पहुंचने में सफल हो गई, लेकिन उन्होंने देखा कि चार महिलाएं नदी में डूब रही थीं, वह तुरन्त वापस नदी में कूद गई। उन्होंने अपनी साड़ी उतार कर उसका सिरा डूबती हुई महिलाओं की ओर फेंका। साड़ी पकड़ी हुई चार महिलाओं सहित कुमारी राजकुमारी देवी नदी के किनारे की तरफ तैरते हुए चली। इस प्रकार वे उन डूबती हुई महिलाओं को सुरक्षित तट पर ले आई।

कुमारी राजकुमारी देवी ने अपनी जान को जोखिम में डालकर चार महिलाओं को बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

(2) श्री वी० बी० रविशंकर,
सं० 1596, न्यू नं० 73
फर्स्ट मेन रोड, नागप्पा ब्लाक,
श्री राम पुरम, बंगलौर—21

1 सितम्बर, 1987 को श्री राम पुरम में एक घर में एल० पी० जी० गैस सिलेण्डर फट गया और पड़ोसी श्री वी० बी० रवि शंकर तथा उनका भाई दुर्घटना स्थल की ओर दौड़े। उन्होंने अग्निशमन सेवा तथा पुलिस को विस्फोट के बारे में सूचित किया और दुर्घटना ग्रस्त घर के अन्दर जाकर तीन बच्चों को बचा लिया। घर में फंसे दूसरे लोगों की तलाश करते हुए श्री रवि शंकर को ठोकर लगी और वे मकान की पहली मंजिल से नीचे गिर पड़े और उन्हें सिर पर गहरी चोटें आई।

श्री वी० बी० रविशंकर ने अपने भाई के साथ मिलकर अपनी जान की जोखिम में डालकर तीन बच्चों की जिन्दगी बनाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

(3) कुमारी के० सीथालती,
पुत्री श्री कृष्णन उर्फ किटू,
3/476 इण्डिया म्पोटा,
अलिलूर, पो० ओ० नेम्मारा,
पालघाट, जिला, केरल

16 सितम्बर, 1988 को श्रीमती ओमना एक तालाब में नहाते समय फिसल गई तथा उसमें गिर पड़ी। वह अपनी जान बचाने के लिये संघर्ष कर रही थी। यह देख कर उन्हें बचाने के लिये दो अन्य महिलायें भी तुरन्त तालाब में कूद गई लेकिन वे श्रीमती ओमना के साथ डूबने

लगीं। इतने में कुमारी लीलावती जो संयोग से उधर ही आ रही थी स्थिति को समझते हुए डूबती हुई महिलाओं को बचाने के लिये तुरन्त तालाब में कूद पड़ी। बड़ी कठिनाई से उन्होंने एक-एक कर के तीनों महिलाओं को बचा लिया।

कुमारी लीलावती ने अपनी जान को जोखिम में डाल कर तीन महिलाओं को डूबने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया।

(4) श्री दत्तात्रेय हनुमन्त गायकवाड़ (मरणोपरान्त)
ग्राम खम्बा वाड़ी,
तहसील वेल्हे, जिला पुणे,
महाराष्ट्र।

22 सितम्बर, 1988 को जब अमृतसर जिला भयंकर बाढ़ की चपेट में था श्री गायकवाड़ की नजर उफनती नदी में बहते हुए एक सिख लड़के पर पड़ी। लड़के के सम्बन्धी तथा मित्र असहाय खड़े उसे देख रहे थे। वहां मौजूद लोगों की सलाह की परवाह न करते हुए श्री गायकवाड़ लड़के को बचाने के लिये नदी में कूद पड़े। अपने अथक प्रयासों से उन्होंने लड़के को तो बचा लिया लेकिन दुर्भाग्यवश वे स्वयं उसमें डूब गये।

श्री गायकवाड़ ने अनुकरणीय साहस, तत्परता तथा मानव जाति के प्रति भारी प्रेम का परिचय दिया तथा लड़के को बचाने की कोशिश में स्वयं अपने प्राणों की आहुति दे दी।

(5) श्री लक्ष्मण प्रसाद स्वामी (मरणोपरान्त)
क्वार्टर नं० 53/4, पिन्टो पार्क,
एयर फोर्स, पालम, नई दिल्ली-10।

7 जुलाई, 1988 को पलासी से सुजानगढ़ जा रही एक प्राइवेट बस दुर्घटनाग्रस्त बिजली की एक चालू तार से छू गई जिससे सभी यात्रियों का जीवन संकट में पड़ गया। बस के एक यात्री श्री लक्ष्मण प्रसाद स्वामी इस मौके पर आगे आये और उन्होंने सभी यात्रियों को सुरक्षित बचा लिया। अन्त में उन्होंने देखा कि एक बच्चा अभी भी बस के अन्दर रह गया है। बच्चे को बचाने के लिये वे फिर बस में घुसे। वे बच्चे को बाहर निकालने में तो सफल हो गये लेकिन स्वयं वे इस दुर्घटना का शिकार हो गये तथा बिजली के करन्ट से उनकी मृत्यु हो गई।

श्री स्वामी ने यात्रियों का जीवन बचाने में अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया लेकिन इसके लिये उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

(6) श्री बिपिन चन्द तिवाड़ी (मरणोपरान्त)।
ग्राम बागड़गांव,
पो० आ० रानीखेत, जिला अल्मोड़ा, उत्तर प्रदेश।

10 जनवरी, 1988 को सेरना-अल्मोड़ा मार्ग पर आ रही एक बस जिसमें कई यात्री सवार थे अपना सन्तुलन खो बैठी और एक तरफ को गिर पड़ी। इसके दरवाजे जमीन से आ लगे और बस में आग लग गई। बस के अन्दर फंसे सभी यात्रियों की जान खतरे में थी। दुर्घटना ग्रस्त बस के एक यात्री श्री बिपिन चन्द तिवाड़ी बस से बाहर निकलने में सफल हो गये। अपने सभी यात्रियों की जान बचाने के लिए वे पुनः बस के अन्दर चले गये। वे तीन यात्रियों को बचाने में सफल हो गये लेकिन ऐसा करते हुए उन्होंने स्वयं अपनी जान न्योछावर कर दी।

श्री बिपिन चन्द तिवाड़ी ने उच्च कोटि का अदम्य साहस तथा तत्परता का परिचय दिया और दूसरों का जीवन बचाने के लिये अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

(7) कुमारी रेखा बिष्ट
ग्राम–पूर्वी खेड़ा,
गोलापुर,
हल्दवानी।

1 मार्च, 1988 को पूर्वी खेड़ा गांव की कुमारी रेखा बिष्ट कुछ महिलाओं के साथ जंगल में घरेलू उपयोग के लिये मिट्टी एकत्र करने गई जब वे मिट्टी खोद रहे थे तो अचानक टीला धंस गया और कुमारी रेखा बिष्ट सहित 7 महिलाएं मिट्टी में दब गई। घायल होने के बावजूद कुमारी रेखा मिट्टी के ढेर से बाहर निकल आई और साथ की दूसरी महिलाओं को बचाने में जी जान से जुट गई। दो महिलायें तो इस दुर्घटना में अपने प्राणों से हाथ धो बैठी लेकिन बाकी सभी की जान बचाने में कुमारी बिष्ट सफल हो गई।

कुमारी रेखा बिष्ट ने संकटग्रस्त महिलाओं का जीवन बचाने में अदम्य साहस, तत्परता तथा मानव जीवन के प्रति गहन आस्था का परिचय दिया।

(8) श्री कुन्हाम्मकल अब्दुल कादिर (मरणोपरान्त)।
आसीन द्वीप,
लक्षद्वीप।

20 जुलाई, 1988 को, मछली पकड़ने की एक देशी नौका जिसमें चार मछुआरे सवार थे, आमिनी लैगून के पूर्वी प्रवेश मार्ग पर उलट गई। श्री कुन्हाम्मकल अब्दुल कादिर तथा दो अन्य व्यक्ति संकटग्रस्त मछुआरों को बचाने के लिये समुद्र में कूद पड़े। उल्टी हुई नौका की रस्सी को प्रबल भित्ति के साथ बांधने का प्रयास करते हुए श्री अब्दुल कादिर भित्ति में फंस गये। वह अपने को बाहर निकालने में असफल रहे और अपनी जान से हाथ धो बैठे।

श्री कुन्हाम्मकल अब्दुल कादिर ने उच्च कोटि के साहस तथा मानव जीवन के प्रति प्रगाढ़ प्रेम का परिचय दिया और चार मछुआरों का जीवन बचाने के प्रयास में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

सं० 24 प्रेज-90:—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं —

1. श्री हीरा लाल माझी,
तेजू (आकाशवाणी केन्द्र के पास)
डाकखाना/पुलिस थाना–तेजू, लोहित जिला,
अरूणाचल प्रदेश, पिन–792001

2. श्री सेंभु माझी,
तेजू (आकाशवाणी केन्द्र के पास)
डाकखाना/पुलिस–थाना तेजू, लोहित जिला
अरूणाचल प्रदेश, पिन–792001।

3. श्री सुखदेव माझी,
तेजू (आकाशवाणी केन्द्र के पास)
डाकखाना/पुलिस थाना–तेजू लोहित जिला,
अरूणाचल प्रदेश, पिन–792001।

दिनांक 28 अगस्त, 1988 को जब सारा लोहित जिला भीषण बाढ़ की चपेट में था, बाढ़ से उफनती हुई लोहित नदी के बीच एक छोटे से टापू पर कुछ व्यक्ति दिखाई पड़े। श्री हीरा लाल माझी, श्री सेंभु और श्री सुखदेव माझी घिरे हुए व्यक्तियों को बचाने के लिये तैयार हो गये। हर प्रकार की मुसीबतों के बावजूद उन्होंने बाढ़ से घिरे हुए व्यक्तियों को बचा लिया और उन्हें किनारे पर ले आये।

सर्व श्री हीरा लाल माझी, सेंभु माझी और सुखदेव माझी ने अपनी जानों की परवाह किये बिना बाढ़ से घिरे हुए दो व्यक्तियों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का प्रदर्शन किया।

4. श्री काविया अशोक कुमार छानालाल (मरणोपरान्त)

निवास मोटोमाढ़, प्रान्तिज
तालुक प्रान्तिज,
जिला साबरकांठा।

दिनांक 5 अगस्त, 1988 को जब श्री काविया अशोक कुमार छाना लाल और उसके मित्र बाढ़ से उफनती खारी नदी को देख रहे थे तो उन्होंने देखा कि दो तीन लड़के बाढ़ में उफनती नदी के दूसरी ओर जाने की कोशिश कर रहे हैं। उन लड़कों को सुरक्षित पार कराने के लिये श्री अशोक कुमार तत्काल नदी में कूद पड़े परन्तु इस प्रक्रिया में स्वयं उफनती हुई नदी में बह गये। श्री काविया अशोक कुमार छानालाल ने दूसरों की सहायता करने के प्रयत्न में अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

5. श्री कांजी भाई बाल जी भाई गढ़वी,
डाकखाना सिधोढी मोती, तालुका आबदासा,
जिला कच्छ।

दिनांक 16 जुलाई, 1988 को अभूतपूर्व वर्षा के कारण सिधोड़ी गांव बाढ़ के पानी में डूब गया तथा वहां अनेक ग्रामवासी फस गये। श्री कांजी भाई बालजी भाई गढ़वी घिरे हुए व्यक्तियों को बचाने के कार्य में जुट गये। उन्होंने 14 बच्चों की पानी में डूबी झोंपड़ियों से निकाल कर उनके प्राण बचाये।

श्री कांजी भाई बालजी भाई गढवी ने अपने जीवन की परवाह किये बिना 14 बच्चों का जीवन बचाने में साहस एव तत्परता का परिचय दिया

6 श्री सुधीर कुमार,
मोहल्ला, धारोग
डाकखाना—चम्बा,
जिला—चम्बा, हिमाचल प्रदेश।

दिनांक 27 फरवरी, 1987 को एक लड़की को खोजते हुए, जिसके बारे में बताया गया था कि वह रावी नदी मे कूद गई है, श्री सुधीर कुमार ने एक लड़की को नदी मे बहते हुए देखा। वह तत्काल नदी मे कूद पड़े और उस लड़की को बचा लिया। दो गाडों की सहायता से वह उसे नजदीक के अस्पताल मे उपचार के लिए ले गए।

श्री सुधीर कुमार ने अपनी जान की परवाह किए बिना एक लड़की का जीवन बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

7 श्री अनंतेश गणपति,
कोलांकर्म चियाकुला,
देवाभाग, कारवाड़, कर्नाटक।

8 श्री एकानाथ गणपति जोपाडेकर,
चियाकुला, पाईकी,
देवाभाग, कारवाड़, कर्नाटक।

9 श्री गणपति सोमा गावनकर,
माजली, कारवाड़ कर्नाटक।

10 श्री गिरधर गणपति जोपाडेकर,
चियाकुला,
देवाभाग, कारवाड़, कर्नाटक।

11 श्री पुंडलीक विष्णु, सारंग,
कोडिबाग, कारवाड़, कर्नाटक।

12 श्री रमेश राणोबा, जोपाडेकर,
कोडिबाग, अल्बेवाड़ा कारवाड़
कर्नाटक।

24 अगस्त, 1988 को "सावित्री राम की एक देशी नौका अघाशनी नदी तथा अरब सागर के संगम पर पानी की प्रचण्ड धारा में फंस गई तथा 22 व्यक्तियों सहित डूब गई। इस दृश्य को देखकर, उपर्यक्त व्यक्ति जो कि दो नावों में सवार होकर समुद्र में मछली पकड़ने के लिए जा रहे थे, घटना स्थल की ओर दौड़े और डूबते हुए निस्सहाय दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों को बचा लिया।

उपर्यक्त व्यक्तियों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए 22 व्यक्तियों की जान डूबने से बचा कर अदम्य साहस, तत्परता और मानव जीवन के प्रति प्रेम प्रदर्शित किया।

13 श्री गणपति गोविंदा हरिकांथा,
अघानाशनी कुमटा, करवाड़ जिला, कर्नाटक।

14 श्री मोहन नागप्पा हरिकांथा,
अघानाशनी कुमटा, करवाड़ जिला, कर्नाटक।

15 श्री परमेश्वर लक्का हरिकांथा,
अघानाशनी कुमटा, करवाड़ जिला कर्नाटक।

16 श्री रामचन्द्र घट्टा हरिकांथा,
अघानाशनी कुमटा, करवाड़, जिला कर्नाटक।

27 अगस्त, 1988 को जब 5 मछुआरे अरब सागर में मछली पकड़ कर लौट रहे थे तो वे पानी की प्रचण्ड धारा में फंस गए और उनकी नाव डूबने लगी। इस दृश्य को देखकर, उपर्युक्त व्यक्ति जो खुद भी देशी नौका में समुद्र में मछली पकड़ने गए हुए थे, घटना स्थल की ओर दौड़े और इन 5 मछआरों को डूबने से बचा लिया।

उपर्युक्त व्यक्तियों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए 5 व्यक्तियों की जान डूबने से बचाकर अदम्य साहस और तत्परता दिखाई।

17 श्री दामोदर पोटा खार्वी
संकरूभाग, करवाड़, कर्नाटक।

18 श्री दोड्डालाम्मा कृष्ण टंडेल,
चेंडिये, अल्लीगड्डा, करवाड़, कर्नाटक।

19 श्री गणपति माइका टंडेल,
बिनागा, किल्लेभाग, करवाड़, कर्नाटक।

20 श्री महादेव के कावले,
चेंडिये, अल्लीगड्डा, करवाड़, कर्नाटक।

21 श्री मोहन कृष्ण टंडेल,
संकरूभाग, करवाड़, कर्नाटक।

22 श्री पांडुरंगा चन्द्र टंडेल,
चेंडिये, अल्लीगड्डा, करवाड़, कर्नाटक।

23 श्री पाकु भीकाशी टंडेल,
बिनागा, किल्लेभाग, करवाड़, कर्नाटक।

11 जनवरी, 1987 को एक देसी नौका, जिस पर 30 व्यक्ति सवार थे, अंजादवी द्वीप समूह के निकट समद्र के बीच में डूब गई और उस पर सवार सभी व्यक्ति समुद्र में गिर गए। इसे देखकर, उपर्यक्त व्यक्ति जो कि एक दूसरी देशी नाव पर सवार थे, तत्काल घटनास्थल की ओर दौड़े तथा अपनी जान को भारी जोखिम में डालकर 28 व्यक्तियों को बचा लिया। इस दुर्घटना में दो किशोर अपनी जान गंवा बैठे।

उपर्युक्त व्यक्तियों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए 28 व्यक्तियो की जान बचाने में अदय साहस, तत्परता और मानव जीवन के प्रति प्रेम का प्रदर्शन किया।

24 श्री बी० बी० शिवकुमार,
मं० 1696, नम्बर मं० 73 पहली मुख्य सड़क,
नागप्पा ब्लॉक,
श्रीराम पुरम, बंगलौर–21

पहली सितम्बर, 1987 को श्रीरामपुरम के एक मकान में एल० पी० जी० गैस का एक सिलैंडर फट गया तथा पड़ोसी श्री वी० बी० शिव कुमार तथा उनके भाई श्री वी० बी० रविशंकर घटनास्थल की ओर दौड़े। उन्होंने विस्फोट की सूचना अग्निसेवा तथा पुलिस को दी और घर में घुस गए तथा तीन बच्चों को बचा लिया। दूसरे पीड़ितों को खोजते हुए श्री रविशंकर ठोकर खाकर मकान की पहली मंजिल से नीचे गिर पड़े तथा उनके सिर में गभीर चोटें आईं।

श्री वी० बी० शिवकुमार और उनके भाई ने अपनी जान की परवाह न करते हुए तीन बच्चों की जान बचाने में अदम्य साहस और तत्परता का प्रदर्शन किया।

25 श्री के० भीमाप्पा,

डिप्टी कमांडेंट, होम गार्डस, गलबर्गा जिला, गुलबर्गा, कर्नाटक।

24 जून, 1988 को एस० आर० मित्तर नामक एक व्यक्ति जब मुंडेर की दीवार के सहारे सुस्ता रहे थे तो वे दुर्घटनावश झलसूर झील में गिर पड़े और डूबने लगे। वहां जमा हुए लोगों द्वारा मचाए गए शोर को सुनकर श्री भीमाप्पा दुर्घटनास्थल की ओर दौड़े और झील में कूद पड़े। उन्होंने लगभग 60 फट तैरकर डूबते हुए व्यक्ति को पकड़ लिया और उसे किनारे पर ले आए।

श्री के० भीमाप्पा ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक बहुमूल्य जान को डूबने से बचाने में अदम्य साहस, सूझबूझ तथा तत्परता का प्रदर्शन किया।

26 मास्टर शिवाप्पा,
पुत्र यालाप्पा, शाखापुर, शाखापुर पोस्ट,
येलाबर्गा तालुक,
रायचूर जिला।

2 अप्रैल, 1988 को एक 6 वर्षीय लड़की कुमारी सांविलम्मा, जब पानी पी रही थी तो दुर्घटनावश वह एक 12 फिट गहरे कुएं में गिर गई। वहां पर इकट्ठा हुए लोगों का शोर सुनकर एक 15 वर्षीय लड़का मास्टर शिवाप्पा दुर्घटनास्थल की ओर दौड़ा। वह कुएं में कूद पड़ा और उस लड़की को बचा लिया।

मास्टर शिवाप्पा ने अपनी जान की परवाह न करते हुए कुमारी सांविलम्मा को डूबने से जान बचाने में अदम्य साहस, सूझबूझ तथा तत्परता का प्रदर्शन किया।

27 श्री एम० एम० बाबू
मथूर हाऊस
कुलेथिक्कारा,
पोस्ट, आफिस काजी रामातम,
कनायाझूर, तालुक,
कोट्टायम जिला, केरल।

3 अक्तूबर, 1988 को एक पांच वर्षीय लड़की कुमारी विद्या अचानक ही मूवात्तुपुझा नदी में गिरकर डूबने लगी। वहां इकट्ठे हुए लोगों का शोर सुनकर श्री एम० एम० बाबू जो वहां मौजूद थे, उसको बचाने के लिए बाढ़ आई नदी में बिना झिझक कूद पड़े। उन्होंने लड़की को बचा लिया और उसे एक मछुआरे की मदद से किनारे पर ले आए।

श्री बाबू ने अपनी जान की परवाह न करते हुए लड़की को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता दिखाई।

28 श्री रामायूयन मोनियान,
वेट्टूविलाकामूकनकुझी वीडू,
एजहमकल कोवालम, त्रिवेन्द्रम,
जिला, केरल।

27 जून, 1988 को चार विद्यार्थी विझिजेम बीच पर चट्टानों पर खड़े होकर समुद्र का नजारा देख रहे थे। अचानक एक जोरदार लहर ने उनमें से दो को समुद्र में गिरा दिया और उनमें से एक तत्काल डूब गया। शोरगुल सुनकर श्री मोनियान एकदम उस स्थान पर पहुंचे और डूबते हुए लड़के को बचाने के लिए समुद्र में कूद पड़े। बड़ी कठिनाई से वे मौत से जूझते हुए लड़के को लहरों के क्षेत्र से बाहर लाए और सहायता के लिए हाथ हिलाने लगे। वे एक मछुआरे की सहायता से उसे किनारे पर ले आए।

श्री रामाय्यन मोनियान ने अपनी जान की परवाह किए बिना विद्यार्थी को बचाने में अदम्य साहस, मानसिक सन्तुलन और तत्परता दिखाई।

29. श्री एम० पी० राघव कैमल,
मानचेरिल गांधीनगर,
पोस्ट आफिस
कोट्टायम जिला, केरल।

3 अगस्त 1988 को दो विद्यार्थी नहाते हुए उफनती हुई मीनाचिल नदी में अचानक गिर गए। यह देखकर श्री राघव केमल तत्काल नदी में कूद पड़े और उनमें से एक को बचा लिया। वे दूसरे लड़के को बचाने के लिए नदी में पुन: कूद पड़े किन्तु उसे बचा नहीं सके और लड़का डूब गया।

श्री राघव कैमल ने लड़के को डूबने से बचाने में अपनी जान की परवाह न करते हुए अदम्य साहस और तत्परता दिखाई।

30. श्री वाचिपुराकल कृष्णन,
वेणुगोपालन,
वाचिपुराकल
पोस्ट आफिस पनानगाड,
जिला एर्नाकुलम, केरल।

किनको बोट सेवा में एक लस्कर श्री वेणुगोपालन ने, चार अवसरों पर डूबते हुए छः व्यक्तियों की जानें बचाई। 4-2-84 को उन्होंने एक विद्यार्थी को बचाया जो मुहामपिल्लै बोट जेट्टी में गिर गया। 7-8-88 को उन्होंने दो मछुआरों को डूबने से बचाया जब उनकी नाव एक भयंकर तूफान में उलट गई। 8-9-88 को उन्होंने दो मछुआरों को बचाया जो तेज हवा से उनकी नाव उलट जाने से एर्नाकुलम पश्चजल में गिर पड़े थे। 30-9-88 को उन्होंने एक 55 वर्षीय आदमी की जान बचाई जो अचानक ही वाइपीन फैरी जेट्टी में गिर गया था।

श्री वेणुगोपाल ने अपनी जान की परवाह न करते हुए चार अवसरों पर छः व्यक्तियों की जानें बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता दिखाई।

31. श्री दुर्जन,
गार्फत सोनाघर गांव कवि आसना,
जिला जबलपुर, मध्य प्रदेश।

32. श्री मंगलू
मार्फत महादेव कुढ़का,
गांव कुढकानार,
जिला जबलपुर, मध्य प्रदेश।

14 सितम्बर, 1987 को बस्तर जिले में एक नाव नदी में डूब गई जिसमें 54 व्यक्ति सवार थे और सभी व्यक्तियों की जाने भारी खतरे में थी। इसे सुनकर श्री मंगलू और श्री दुर्जन शीघ्र ही उस स्थान पर पहुंचे और 30 व्यक्तियों को बचा लिया। इस दुर्घटना में चौबीस व्यक्तियों की जानें गईं।

श्री मंगलू और श्री दुर्जन ने अपनी जानों की परवाह किए बिना 30 व्यक्तियों की जानें बचाने में अदम्य साहस और तत्परता दिखाई।

33. मास्टर विष्णुप्रसाद,
गांव कोचेवाही, जिला बालाघाट,
मध्य प्रदेश।

1 अगस्त, 1988 को श्री विष्णुप्रसाद ने पशु चराते समय बाढ़ आई हुई सोन नदी के तेजी से बहते हुए पानी में एक आदमी को डूबते हुए देखा। वे तत्काल ही नदी में कूद पड़े और बहते हुए आदमी की तरफ जाकर उसे किनारे पर ले आए।

मास्टर विष्णु प्रसाद ने अपनी जान की परवाह न करते हुए डूबते हुए एक व्यक्ति की जान बचाने में अदम्य साहस, तत्परता और मानसिक संतुलन का परिचय दिया।

34 श्री सन्तोष वासुदेव कदम,
मूकान तथा पोस्ट बागडे,
ताल० कनकावली
जिला सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र।

17 जुलाई, 1988 को श्री शांताराम गंगाराम चोगले जब बाढ़ के पानी के बीच में से अपनी मोटर साइकिल पर जा रहे थे तो बाढ़ के तेजी से बहते हुए पानी के बहाव में वे बह गए। यह देखकर श्री सन्तोष वासुदेव कदम तेजी से उन तक पहुंचे और उनकी जान बचा ली।

श्री सन्तोष वासुदेव कदम ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक असहाय आदमी की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

35. मास्टर लिआनसुआ
कालकुल्ह, मिजोरम।

36. मास्टर जोहमिनगथांगा,
कालकुल्ह, मिजोरम।

9 अगस्त, 1988 को एक आठ वर्षीय लड़की कुमारी लालरिंडिकी स्कूल के खेल के मैदान में खेलते हुए अचानक ही एक झील में गिर गई और अन्य बच्चे सहायता के लिए चिल्लाए। शोर-गुल सुनकर मास्टर लिआनसुआ और मास्टर जोहमिनगथांगा जल्दी से वहां पहुंचे। मास्टर लिआनसुआ तत्काल ही झील में कूद पड़े और चार गोते लगाने के बाद उन्होंने लड़की को ढूंढ लिया किन्तु थकान के कारण वे लड़की को ऊपर नहीं उठा सके। उन्होंने मास्टर जोहीमनगथांगा को वह स्थान बता दिया जिन्होंने शीघ्र ही झील में डुबकी लगाई और लड़की को बचा लिया।

मास्टर लिआनसुआ और मास्टर जोहमिनगथांगा ने अपनी जानों की परवाह न करते हुए एक छोटी सी लड़की की जान को बचाने में अदम्य साहस, मानसिक संतुलन और तत्परता दिखाई।

37. श्री कुमुलु मुदुली,
गांव मुदुलीगुडा
पी० एस० मोरकेला
जिला कोरापुट, उड़ीसा।

8 मई, 1988 को एक देसी नाव, जिसमें 27 व्यक्ति सवार थे, चिलाकोंडा जलाशय के बीच उलट गई जिसके परिणामस्वरूप 12 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। श्री कुमुलु मुदुली और 11 अन्य मांझी जलाशय के किनारे पर पहुंचने में सफल हो गए। तालाब के किनारे पर पहुंच कर श्री कुमुलु मुदुली ने देखा कि तीन व्यक्ति गहरे पानी में अपनी जान के लिए संघर्ष कर रहे थे। वे बिना शिक्षक के तैरकर उन असहाय व्यक्तियों तक पहुंचे और एक-एक करके उन्हें बचा लिया।

श्री कुमुलु मुदुली ने अपनी जान जोखिम में डालकर तीन व्यक्तियों की जानें डूबने से बचाई।

38. श्री बंसीधर पक्षी,
चपरासी, धवलेश्वर विद्यापीठ
मुकाम/पीओ० मनचेश्वर, जिला कटक, उड़ीसा।

39. श्री विद्याधर पारिदा,
हैडमास्टर, धवलेश्वर विद्यापीठ, मु०/पीओ मनचेश्वर,
जिला कटक, उड़ीसा।

40. श्री ब्रज किशोर मल्लिक,
पी० ई० टी०, धवलेश्वर विद्यापीठ,
मुकाम/पी० ओ० मनचेश्वर, जिला कटक, उड़ीसा।

8 मार्च, 1988 को विमानन अनुसन्धान केन्द्र, चारतिया का एक हवाई जहाज धवलेश्वर हाई स्कूल के बिलकुल पास ही खुले मैदान में गिर गया। जलते हुए हवाई जहाज को देखकर और खतरे को भांपते हुए सर्वश्री पक्षी, पारिदा और मल्लिक ने स्कूल के 70 विद्यार्थियों को खिड़कियों द्वारा बाहर निकालते हुए शीघ्र कार्रवाई की और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। सर्वश्री बंसीधर पक्षी, विद्याधर परिदा और बृज किशोर मल्लिक ने विद्यार्थियों को सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने में साहस, तत्परता और मानसिक सन्तुलन दिखाया।

41. श्री अमरचन्द प्रजापति,
नाहर सिंह कालोनी, रतनादा,
जोधपुर, राजस्थान।

28 जून, 1986 को नाहर सिंह कालोनी, जोधपुर में एक घर में आग लग गई और दो बच्चे जलने से जख्मी हो गए। कुछ निवासियों के साथ एक पुलिस दलएक लालटेन लेकर जांच के लिए उस घर में गया। अचानक ही एक धमाके से आग पूरे घर में फैल गई और बहुत से व्यक्तियों की जानें संकट में पड़ गई क्योंकि उनमें से बहुतों के कपड़ों में आग लग गई थी। श्री अमरचन्द प्रजापति ने जो स्वयं सभी जलते हुए मकान में थे, आग फैलने से रोकने में बहुत साहस और मानसिक सन्तुलन दिखाया और इस कार्य में स्वयं बुरी तरह से जल गए।

श्री अमरचन्द प्रजापति ने अपनी जान की परवाह न करते हुए आग से बहुत से व्यक्तियों की जानें बचाने में अदम्य साहस और तत्परता दिखाई।

42. श्री चन्द्र प्रकाश,
रेलवे स्टेशन थाणी गोपालपुरा
सवाई माधोपुरा, राजस्थान।

30 जनवरी, 1988 को एक तेरह वर्षीय बालिका कुमारी सीता जब पीछा करती हुई एक गाय से बचने के लिए भाग रही थी तो अचानक वह एक कुएं में गिर गई और सहायता के लिए चिल्लाई। यह सुनकर श्री चन्द्र प्रकाश उसे बचाने के लिए तत्काल 35 फुट गहरे कुएं में कूद पड़े। वहां इकट्ठे हुए लोगों द्वारा कुएं में लटकाई एक लम्बी रस्सी की सहायता से वे उस लड़की को कुएं से बाहर सुरक्षित ले आए।

श्री चन्द्र प्रकाश ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक लड़की को डूबने से बचाने में अदम्य साहस और तत्परता दिखाई।

43 श्री कालू राम खटीक,
मार्फत गवर्नमेंट अपर प्राइमरी स्कूल,
मलका खेरा (मंडलगढ़)
जिला भीलवाड़ा, राजस्थान।

25 जनवरी, 1988 को श्री भोलू अचानक ही एक नंगे तार से छू गए और उससे चिपक गए। वे बेहोश और मरने को हो गए। यह देखकर श्री कालूराम खटीक जो वहां मौजूद थे, उन्होंने शीघ्र ही पास में पड़ी हुई लकड़ी उठाई और दुर्घटना ग्रस्त व्यक्ति को शीघ्र ही नंगे तार से दूर धकेल दिया। वे शीघ्र ही बेहोश व्यक्ति को उपचार के लिए पास के अस्पताल में ले गए।

श्री कालूराम खटीक ने अपनी जान की परवाह न करते हुए एक व्यक्ति की जान बचाने में अदम्य साहस, तत्परता और सूझबूझ का परिचय दिया।

44 श्री सुरेशचन्द्र पन्त,
ग्राम चितगल, पटवारी एरिया,
चौपथ, तहसील तथा जिला पिथौरागढ़,
उत्तर प्रदेश।

दिनांक 19 जुलाई, 1988 को कोटेरा में एक ट्रक दुर्घटनाग्रस्त हो गया तथा इसमें सवार सभी व्यक्ति उसमें फंस गए। खुद घायल होते हुए भी श्री सुरेशचन्द्र पंत ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए तथा मानव जीवन के प्रति प्रेम दर्शाते हुए पीड़ित व्यक्तियों को बाहर निकाला।

श्री सुरेश चन्द्र पंत ने दुर्घटना के शिकार व्यक्तियों को बचाने में अदम्य साहस, तत्परता और मानव जीवन के प्रति प्रेम का परिचय दिया।

45 श्री रतन सिंह होतियाल,
निवासी—पंग,
डाकखाना—पंग,
तहसील—धारचूला,
जिला—पिथौरागढ़ (उत्तर प्रदेश)

दिनांक 21 दिसम्बर, 1987 की अर्द्ध—रात्रि को लोहाघाट स्थित पुनेथा भवन में आग लग गई तथा इस आग में आठ दुकानें जल कर भस्म हो गई। श्री रतन सिंह होतियाल कुछ स्थानीय युवकों के साथ मिलकर लगातार तीन घंटे तक आग से बड़ी दिलेरी से जूझते रहे और अन्ततः इस पर काबू पाने में सफल हो गए। यदि उन्होंने समय पर कार्यवाही नहीं की होती, तो कई जानें चली गई होती।

श्री रतन सिंह होतियाल ने अन्य युवकों के साथ आग बुझाने से अपने अदम्य साहस एवं तत्परता का परिचय दिया।

46 सं० 14258593 लांस नायक,
राजेश कुमार,
1, आर्मड डिवीजन,
सिग्नल रेजिमेंट,
मार्फत 56 ए०पी०ओ०।

दिनांक 15 जून, 1987 को एक प्राइवेट बस, जिसमें 80 यात्री सवार थे, भाखड़ा मुख्य नहर में गिर गई। इसकी सूचना मिलते ही, लांस नायक राजेश कुमार तुरन्त घटनास्थल पर पहुंच गए, वहां उन्होंने बस के कंडक्टर को एक औरत को बचाने का प्रयास करते हुए देखा। लेकिन वह तेज धारा के कारण सफल नहीं हो पा रहा था। लांस नायक राजेश कुमार तुरन्त नहर में कूद पड़े और उस औरत को बचा लिया। तब उन्होंने नहर के बीचोंबीच एक बच्चे को बहते हुए देखा। वे तुरन्त नहर में कूद पड़े और उस बच्चे को भी बचा लिया। तब वे उन दोनों को तुरन्त उपचार के लिए समीपवर्ती हस्पताल ले गए।

लांस नायक राजेश कुमार ने अपने जीवन को गंभीर खतरे में डालतेहुए दो व्यक्तियों को डूबने से बचाकर मानव जीवन के प्रति अत्यन्त प्रेम' अदम्य साहस और तत्परता का परिचय दिया।

47 सं० 3980241 के० सिपाही लेखराज
14 डोगरा रेजिमेंट,
मार्फत 56, ए० पी० ओ ०।

दिनांक 27 अगस्त, 1987 को सेना का एक गश्ती दल जब रस्से की सहायता से एक नाला पार कर रहा था तब इस दल का एक सदस्य सिपाही चन्दर मोहन जख्मी होकर नाले में गिर गया। यह देखकर, गश्ती दल का एक और सदस्य सिपाही लेखराज उसे बचाने के लिए दौड़ पड़ा। वह नाले में कूद पड़ा और उसे बाहर ले आया।

सिपाही लेखराज ने अपने जीवन को होने वाले गंभीर खतरे की परवाह न करते हुए सिपाही चन्दर मोहन की जान बचाकर अदम्य साहस मानसिक संतुलन और तत्परता का परिचय दिया।

48 जी०ओ०—1808 एक्स सहायक अभियन्ता,
तरसेम लाल,
ग्राम—सुन्दरवाल
डाकखाना—वान्दिया खुर्द,
जिला—होशियारपुर (पंजाब)

दिनांक 18 अक्तूबर, 1987 को रात्रि को अभूतपूर्व हिमपात के कारण 800 विहाड़ी मजदूर मनाली-सरचू-लेह रोड के निकट 3169 मीटर की ऊंचाई पर कड़कड़ाती ठण्ड में फंस गए। इसकी सूचना मिलते ही प्रोजेक्ट दीपक के 394वें रोड मेंटेनेंस प्लाटून के सहायक अभियन्ता, श्री तरसेम लाल ने 21 अक्तूबर, 1987 को बचाव कार्य प्रारम्भ किया। घटनास्थल पर पहुंच कर उन्होंने देखा कि फंसे हुए अधिकतर व्यक्ति बुरी तरह थक चुके थे और चलने में असमर्थ थे। उन्होंने एक थके—हारे श्रमिक को अपने कंधों पर उठाया और उसे सुरक्षित कैम्प में ले आए। तब उन्होंने कई अन्य व्यक्तियों को कैम्प ले गिया और फंसे व्यक्तियों को बचाने का प्रयत्न किया।

श्री तरसेम लाल ने अपने जीवन को गंभीर खतरे में डालकर फंसे हुए श्रमिकों को बचाने में अदम्य साहस एवं कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया।

49 सं० 2763555 पी० हवलदार विनायक फानासे,
6, मराठा, एल०आई०, मार्फत 56 ए०पी०ओ०।

50. सं० 3377422 सिपाही गुरमीत सिंह
10 सिख रेजीमेंट, मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

51. सं० 3380223 एक्स सिपाही जगतार सिंह
10 सिख रेजिमेंट, मार्फत 56 ए०पी०ओ०।

दिनांक 24 अप्रैल, 1987 को सियाचिन ग्लेसियर में न्यू कैम्प ज्वाला चौकी पर एक भारी हिमस्खलन हुआ जिसमें 38 कर्मचारी फंस गए। हवलदार विनायक फानासे सिपाही गुरमीत सिंह और सिपाही जगतार सिंह, जो पास की चौकी पर थे, ने बचाव कार्य शुरू किया। उन्होंने 20 से 25 फुट की बर्फ की परत में से एक सुरंग खोदी और बर्फ के नीचे दबे हुए कार्मिकों को सुरक्षित रूप से बाहर निकालने में सफल हुए।

उपरोक्त बहादुर जवानों ने बर्फ में दबे 38 कार्मिकों की जाने बचाकर मानव जीवन के प्रति अत्यन्त प्रेम, अदम्य साहस एवं तत्परता का परिचय दिया।

52. सं० 9922518 सिपाही छैरिंग दोरजी,
हाई एलटीट्यूड वारफेयर स्कूल,
मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

53. सं० 9922127 सिपाही चेथनपुटुप,
हाई एलटीट्यूड वारफेयर स्कूल,
मार्फत 56 ए० पी० ओ०।

दिनांक 27 मई 1987 को लकड़ी का एक पुल पार करते हुए एक छाताधारी सैनिक सिन्ध नदी में गिर पड़ा। चीख पुकार सुन कर सिपाही छैरिंग दोरजी और सिपाही चेतन मुटुप उसे बचाने के लिए दौड़े। सिपाही चेतन पुटुप नदी में कूद पड़ा और डूबते हुए निस्सहाय व्यक्ति को पकड़ लिया। परन्तु वह उसे किनारे तक नहीं ला सका क्योंकि बर्फीले पानी ने उसके शरीर को सुन्न कर दिया था। वह दृढ़ संकल्प के साथ उसे पकड़े रहा और सहायता के लिए चिल्लाया। इस पर सिपाही दोरजी नदी में कूद पड़ा और वहां पहुंच गया। दोनों बहादुर जवान बड़ी कठिनाई से उस व्यक्ति को किनारे पर ले आए सिपाही छैरिंग दोरजी और चेतन मुटुप ने अपनी जीवन को होने वाले गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए छाताधारी सैनिक की जान बचाने में साहस और संकल्प का परिचय दिया।

54. मेजर राजेन्द्र सिंह कुल्लेहरिया,
9 महार रेजिमेंट द्वारा 99 ए० पी० ओ०।

31 जुलाई 1987 को कैलाश पर्वत के पर्वतारोहण के लिए गए भारत—फ्रांस अभियान दल के सदस्य डा० एम० फन्ने पर्वत पर चढ़ने के दौरान फिसल गए और पर्वत से निकल रही पानी की एक धारा में गिर गए तथा धारा की तीव्र गति के कारण बहने लगे। दल के सम्पर्क अधिकारी मेजर आर० एस० कुल्लेहरिया ने यह देखा और उनको बचाने के लिए तुरन्त धारा में कूद पड़े। वे बेहोश डा० फन्ने को किनारे पर लाए और उनका प्राथमिक उपचार किया।

मेजर आर० एस० कुल्लेहरिया ने अपने जीवन को होने वाले गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए फ्रांसीसी पर्वतारोही का जीवन बचाने के लिए उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

55. सं० 14373977 के० धनूकधारी रमेश चन्द्र चौहान
1861 लाइट रेजिमेंट (आर्टिलरी) द्वारा
56 ए० पी० ओ०।

25 जून, 1987 को एम० पी० एफ के कांस्टेबल पूरन चन्द एक रस्सी के पुल को पार करते हुए फिसल गए और नदी मे गिर गए। वह तेज धारा मे बहते हुए जा रहे थे। यह देखकर, कांस्टेबल अवधेश कुमार उनको बचाने के लिए नदी मे कूद पड़े लेकिन वह भी तेज धारा मे बहने लगे। सौभाग्यवश कांस्टेबल पूरन चन्द को कोई चीज हाथ लग गई जिसे पकड़ कर वे बाहर आ गए। लेकिन कांस्टेबल अवधेश कुमार भारी मुसीबत में थे। खतरे को देखते हुए वस्तूकधारी रमेश चन्द्र चौहान ने अपनी कमर में एक नायलोन की रस्सी बांधी और कान्स्टेबल अवधेश कुमार को बचाने के लिए नदी मे कूद पड़े। वह उनको तट पर लाने में सफल हो गए लेकिन दुर्भाग्यवश कांस्टेबल अवधेश कुमार तब तक मर चुके थे।

वस्तूकधारी रमेश चन्द्र चौहान ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए उत्कृष्ट साहस, तत्परता और मानव जीवन के प्रति प्रेम का प्रदर्शन किया।

56 01285 लेफ्टिनेन्ट कमांडर सुरेश कुमार चौहान
आई० एन० एस० सरकारस, नेवल बेस,
विशाखापत्तनम।

9 जुलाई, 1987 को मंचोरियल रेलवे स्टेशन के समीप दक्षिण एक्सप्रेस की गम्भीर दुर्घटना हुई और कुछ डिब्बे पानी मे बह गए और कुछ पलट गए। लेफ्टिनेन्ट कमांडर एस० के० चौहान प्रथम श्रेणी के डिब्बे मे यात्रा कर रहे थे। और उनका डिब्बा पूरी तरह से पलट चुका था, वे बड़ी कठिनाई से डिब्बे के बाहर आए। उन्होंने देखा कि 5 व्यक्ति अपने डिब्बे मे फंस गए थे। वह दुबारा डिब्बे में घुसे और निस्सहाय व्यक्तियो को बचा लाए।

लेफ्टिनेन्ट कमांडर चौहान ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए यात्रियों को बचाने मे उत्कृष्ट साहस और तत्परता दिखाई।

57. जी/162962 एफ० अधीक्षक बी०आर० II सलीम शाह एम
383 रोड मेंटिनेंस प्लाटून (जी०/आर० ई० एफ०)
द्वारा 63 रोड कंसट्रक्शन कं० (जी आर ई एफ)
द्वारा 99 ए० पी० ओ०

58 बेदार कांचा लामा कोड नं० 1607
467, रोड मेंन्टीनेन्स प्लाटून (जी० आर० ई० एफ)
द्वारा 63 रोड कंसट्रक्शन कं० (जी आर ई एफ)
द्वारा 99 ए० पी० ओ०

28 दिसम्बर, 1987 को छः रोगियों को ले जा रही एक टोयटा एम्बुलेंस कार ताशीगंज बड़ीफोरंग रोड पर घाटी में लुढ़क गई। सूचना मिलने पर अधीक्षक बी०आर० ग्रेड II सलीम शाह और बेदार कांचा लामा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिलकुल परवाह न करते हुए घाटी में उतर गए और एम्बुलेंस कार के पांच घायलो को बचाया। उन्होंने एम्बुलेंस कार की छठी सवारी को भी खोज निकाला जो मर चुकी थी।

अधीक्षक सलीम शाह और बेदार कांचा लामा ने अपने जीवन के प्रति गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए 5 व्यक्तियों के जीवन को बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता दिखाई।

59. श्री मनोज कुमार सिंह
सी-741 न्यू फ्रेंडस कालोनी,
नई दिल्ली।

60 श्री अलेक्जेंडर थामस,
1046 सेक्टर-4, आर० के० पुरम,
नई दिल्ली।

29 जून, 1987 को अंसल भवन, नई दिल्ली की 12वी मंजिल मे भयंकर आग लग गई और अनेक व्यक्ति जलते हुए भवन मे फंस गए। सर्वश्री मनोज कुमार सिंह और अलेक्जेंडर थामस जो घटना स्थल पर मौजूद थे तुरन्त बचाव कार्यों में जुट गए। उन्होंने अंसल भवन और अम्बादीप भवन के बीच एक अस्थायी पुल बनाया और 50 व्यक्तियों को बचा लिया।

सर्वश्री मनोज कुमार सिंह और अलेक्जेंडर थामस ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह न करते हुए 50 व्यक्तियों के जीवन को बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता दिखाई।

ए० के० उपाध्याय, निदेशक

---

## गृह मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 27 मार्च, 1990

### संकल्प

सं० 20012/4/88-हिन्दी-2—भारत सरकार, गृह मंत्रालय के दिनांक 25 नवम्बर, 1988 के संकल्प सं० 20012/4/88-हिन्दी-2 के अनुक्रम मे निम्नलिखित संसद सदस्यो को गृह मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति का गैर सरकारी सदस्य नामित करती हैं :—

1. श्री जय प्रकाश, संसद सदस्य (लोकसभा)
2. श्री सूर्य नारायण सिंह, संसद सदस्य (लोक सभा)

### आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति समिति के सभी सदस्यो, राष्ट्रपति सचिवालय, मंत्रिमण्डल सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, भारत के नियंत्रक व महालेखा परीक्षक, लोक सभा सचिवालय और राज्य सभा सचिवालय को भेजी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प आम जानकारी के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय।

बी० एस० सहगल, उप सचिव
एवं सदस्य सचिव, हिन्दी सलाहकार।

---

## उद्योग मंत्रालय

### कम्पनी कार्य विभाग

नई दिल्ली-1, दिनांक 19 मार्च, 1990

सं० 27/11/90-सी० एल०-2:—कम्पनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) की धारा 209क की उपधारा (1) के खण्ड (ii) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा कम्पनी कार्य विभाग के श्री टी० पाण्डियन, सहायक निरीक्षण अधिकारी को उक्त धारा 209 क के प्रयोजन के लिये प्राधिकृत करती हैं।

दिनांक 27 मार्च, 1990

सं० 27/11/90-सी० एल -2 :—कम्पनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) की धारा 209क की उपधारा (1) के खण्ड (ii) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा कम्पनी कार्य विभाग के श्री अनिल मोहन सिंह सहायक निरीक्षण अधिकारी को उक्त धारा 209 क के प्रयोजन के लिये प्राधिकृत करती हैं।

एम० एल० शर्मा, अवर सचिव

---

## कृषि मंत्रालय

### (कृषि और सहकारिता विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 14 मार्च, 1990

### संकल्प

सं० 12-1/90-आई० पी० ई० एस०/ई० ए०:—ग्रामीण लोगों के के कल्याण और समृद्धि के लिये कृषि विकास के अति महत्व को समझते हुए, सरकार ने नई कृषि नीति को उच्चतम प्राथमिकता देने का निर्णय लिया हैं। इस नीति के कार्यान्वयन की निरन्तर "मानीटरिंग" की जायेगी ताकि कृषि क्षेत्र का एक पद्धति बद्ध विकास हो सके और इस विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों विशेष रूप से ग्रामीण लोगों को मिल सके।

2. सहभागिता वाली सरकार देने के दृढ़ संकल्प की भावनानुसार यह निर्णय लिया गया है कि एक स्थाई सलाहकार समिति की नियुक्ति की जाये जिसमें किसान समुदाय के प्रतिनिधि भी शामिल हों तथा यह समिति कृषि सम्बन्धी नीति के निरूपण और कार्यान्वयन के बारे में सतत आधार पर सरकार को सहायता एवं सलाह प्रदान करें।

3. इस स्थाई समिति में निम्नलिखित जाने माने व्यक्ति शामिल होंगे

1. श्री शरद जोशी—अध्यक्ष
2. श्री भानु प्रताप सिंह — सदस्य
3. श्री वी० शोभनद्रीश्वर राव — तदैव
4. डा० कृष्णा राजनगो — तदैव
5. श्री कुम्भा राम आर्य — तदैव
6. श्री वीरेन्द्र वर्मा — तदैव
7. श्री जगजीत सिंह धुन्नागाना— — तदैव

4. उक्त सदस्यों का कार्यकाल इस आदेश की तारीख से 3 वर्ष की अवधि के लिये होगा। सदस्य पुन नामांकन के पात्र हैं।

5. कृषि मंत्रालय नियमित रूप से इस समिति के साथ मिलकर कार्यवाही करेगा और कृषि क्षेत्र, जिसमें पशुपालन मात्स्यकी बागबानी आदि जैसे कार्य भी शामिल हैं, के विकास सम्बन्धी कार्य नीति, कर्ज सहित विभिन्न आदानों की उपलब्धता, मूल्यों, विपणन, भण्डागारों, जैसी सहायक सुविधाओं और कृषि विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने वाली ऐसी अन्य सुविधाओं सम्बन्धी महत्वपूर्ण नीति गत मामलों पर इस समिति के विचार प्राप्त करेगा।

6. इस समिति के साथ होने वाले विचार विमर्श से कृषि मंत्रालय को योजना आयोग, वित्त मंत्रालय और अन्य सम्बन्धित कार्यालयों के विचारार्थ महत्वपूर्ण प्रस्ताव तैयार करने में मदद मिलेगी। यह समिति कृषि विकास से जुड़े ऐसे अन्य मामलों पर भी कृषि मंत्रालय को सलाह देगी जो इसे सौंपे जायेंगे।

7. कृषि और सहकारिता विभाग में अर्थ और सांख्यिकी सलाहकार इस सलाहकार समिति के गैर-सदस्य सचिव होंगे और सब तरह की आवश्यक सहायता प्रदान करेंगे।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक एक प्रति भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों, सभी राज्य सरकारों और संघ शासित प्रदेशों, योजना आयोग, मंत्रिमण्डल सचिवालय, राष्ट्रपति सचिवालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, प्रधान मंत्री के कार्यालय, भारत के महानिदेशक और महालेखाकार और कृषि मंत्रालय (कृषि और सहकारिता विभाग) सभी सम्बन्ध और अधीनस्थ कार्यालयों को भेजी जाये।

यह भी आदेश दिया है कि यह संकल्प आम सूचना के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाय।

के० राजन, संयुक्त सचिव

## PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 28th March 1990

No. 22-Pres/90.—The President is pleased to approve the award of "Sarvottam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Shiv Kumar Razak, (Posthumous)
Mohalla—Daigatu,
Police Station—Mango,
Jamshedpur, Distt. Singhbhum,
Bihar.

On 28th August, 1988, Shri Shiv Kumar Razak, while taking bath in Suberna Rekha river, noticed that five boys were drowning in the midstream. Without caring for his life, Shri Razak immediately jumped into the swollen river and rescued four boys. While trying to save the fifth boy, he himself was drowned.

Shriv Kumar Razak displayed supreme courage nad promptitude in saving the lives of four boys and in the process lost his own life.

2. Smt. Ranjanben Devjibhai Chothani,
C/o Shri Devji Keshavji Chothani,
Jayan Society, near the 50 foot road side,
Opp : Dinesh Power Laundry,
Rajkot-2, Gujarat.

On 16th July, 1988, Smt. Ranjanben was returning back to her house with her two sons and a daughter and was stranded due to heavy rains alongwith five villagers. Soon the entire village was submerged under rain waters and their lives were in peril. On this, Smt. Chothani removed her saree and gave it to others so that with its help they could climb on to the roof of a locked house. The ungrateful men after climbing over the roof left the helpless woman and her children in the lurch. She tried to climb on to the roof with her two sons perched on her shoulders and her daughter in tow, but as ill luck would have it, she lost her balance and her two boys fell into water and drowned. All her cries for help went in vain. She took shelter in a nearby bush and spent the night crying. At dawn a washerman heard her cries and rescued her and her daughter.

Smt. Ranjanben showed exemplary courage and concern for human life in saving the lives of five persons and in the process lost her two sons.

No. 23-Pres/90.—The President is pleased to approve the award of "Uttam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Kumari Raj Kumari Devi,
D/o Shri Charan Paswan,
Village Sanha,
P.S. Sahibpur Kamal,
Distt. Begusarai, Bihar.

On 11th August, 1988, Kumari Raj Kumari Devi was crossing a flooded river near Sanha Village in a country boat and suddenly the boat capsized. She somehow managed to reach the shore, but noticed that four women were drowning in the river. She immediately jumped back into the river. She removed her saree and threw its one end towards the drowning women. Kumari Raj Kumari Devi swam towards the shore with four women clutching on to the saree She thus brought the helpless women safely on shore.

Kumari Raj Kumari Devi showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of four women from drowning unmindful of the great risk involved to her own life.

2. Shri V. B. Ravishankar,
No. 1596, New No. 73,
1st Main Road, Nagappa Block,
Shrirampuram, Bangalore-21, Karnataka.

On 1st September, 1987, an LPG gas cylinder exploded in a house in Shrirampuram and the neighbours Shri V. B. Ravishankar and his brother rushed to the site. They informed the Fire service and Police about the explosion and entered the house an rescued three children. While looking for other victims Shri Ravishankar stumbled and fell down from the 1st floor of the house and sustained serious head injuries.

Shri V. B. Ravishankar alongwith his brother showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three children unmindful of the risk involved to his own life.

3. Kum. K. Leelavathy,
D/o Shri Krishnan alias Kittu,
3/476, Idiyampotta,
Ayiloor, P.O. Nemmara,
Palghat District, Kerala,

On 16th September, 1988, Smt. Omana, while taking bath in a pond, slipped and fell into it and was struggling for her life. On seeing this, two other women immediately jumped into the pond to rescue her but they also strated drowning alongwith Smt. Omana. Meanwhile, Kumari Leelavathy who happened to come by, sensed the situation and immediately jumped into the pond to rescue the drowning women. She managed to rescue all the three victims one by one with great difficulty.

Kumari Leelavathy showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three women from drowning unmindful of the risk involved to her own life.

4. Shri Dattatiya Hanumant Gaikwad, (Posthumous)
Village—Khambawadi,
Tehsil Velhe, Distt. Pune,
Maharashtra.

On 22nd September, 1988, when the Amritsar district was in the grip of severe floods, Shri Gaikwad saw a Sikh boy being swept away by the swollen Beas river. The boy's relatives and friends were watching helplessly. Against the advice of all present, Shri Gaikwad jumped into the river to sae the boy. With great efforts he managed to save the boy but as the bad luck would have it, he himself got drowned.

Shri Gaikwad showed exemplary courage, promptitude and great concern foi human life and made the supreme sacrifice while trying to save a boy from drowning.

5. Shri Lakshman Prasad Swamy, (Posthumous)
Quarter No. 53/4, Pinto Park,
Air Force, Palam, New Delhi-10

On 7th July, 1988, a private bus going from Malasi to Sujangarh accidentally came into contact with a live-wire and the lives of all the passengers were in peril. Shri Lakshman prasad Swamy, a passenger of the bus rose to the occasion and rescued all the passengers to safety. At last he noticed that a child was still left inside the bus. He again entered the bus to rescue the child. He successfully brought the child out, but he himself fell a victim and was electrocuted.

Shri Swamy showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of the passengers but in the process sacrificed his own life.

6. Shri Vipin Chand Tiwari, (Posthumous)
Village—Bagadbaon,
P.O.—Ranikhet,
Distt.—Almora, U.P.

On 10th January, 1988, a bus on Khairana-Almora Road, with several passengers on board, lost its balance, turned and fell on its side with the doors touching the ground and caught fire. The live of all the passengers trapped inside were in peril. Shri Vipin Chand Tiwari, a passenger of the ill-fated bus, managed to come out of the bus. He entered the bus again to save the lives of co-passengers. He succeeded in rescuing three persons but in the process lost his own life.

Shri Vipin Chand Tiwari showed conspicuous courage of highest order and promptitude and sacrificed his life while saving the lives of others.

7. Kumari Rekha Bisht,
Village—Poorvi Khera,
Gholapur,
Haldwani, U.P.

On 1st March, 1988, Kumari Rekha Bisht of village Poorvi Khera, alongwith some women went to the nearby jungle to collect mud for domestic use. While digging, the mound suddenly caved in and 7 women including Kumari Rekha Bisht were buried in the mud. Despite being injured, Kum. Rekha managed to come out of the pile of mud and made valiant efforts to save the other women. She succeeded in saving the live of all except two women who died in the incident.

Kumari Rekha Bisht showed conspicuous courage, promptitude and concern for human life in saving the lives of the hapless women.

8. Shri Kunhammakkal Abdul Kader, (Posthumous)
Amini Island, Lakshadweep.

On 20th July, 1988, a country fishing craft with four fishermen on board capsi. d at the eastern entrance of the Amini Lagoon. Shri Kunhammakkal Abdul Kader and two others jumped into the sea to rescue the helpless victims. While attempting to secure the rope of the capsized boat to the coral reef, Shri Abdul Kader got trapped into the reef He could not extricate himself and lost his life.

Shri Kunhammakkal Abdul Kader showed courage of the highest order and great concern for human life and sacrificed his own life in his effort to save the lies of the four fishesmen.

No. 24-Pres/90.—The President is pleased to approve the award of 'Jeevan Raksha Padak' to the undermentioned persons :—

1. Shri Hiralal Majhi,
Tezu (near A.I.R. Station),
PO/PS—Tezu, Lohit District,
Arunachal Pradesh, PIN-792001.

2. Shri Sembhu Majhi,
Tezu (near A.I.R. Station),
PO/PS—Tezu, Lohit District,
Arunachal Pradesh, PIN-792001.

3. Shri Sukhdev Majhi,
Tezu (near A.I.R. Station),
PO/PS—Tezu, Lohit District,
Arunachal Pradesh, PIN-792001.

On 28th August, 1988, when the whole Lohit District was in the grip of heavy floods, some persons were sighted on a small island in the middle of the flooded river Lohit. Shri Hiralal Majhi, Shri Sembhu Majhi and Shri Sukhdev Majhi volunteered themselves to rescue the marooned persons. Against all odds, they rescued the marooned persons and brought them ashore.

S/Shri Hiralal Majhi, Sembhu Majhi and Sukhdev Majhi displayed exempary courage and promptitude in saving the lives of the two marooned persons unmindful of the risk involved to their own lives.

4. Shri Kadiya Ashokkumar Chhanalal, (Posthumous)
Residence Motomadh, Prantij,
Taluk—Prantij,
District—Sabarkantha, Gujarat.

On 5th August, 1988, Shri Kadiya Ashokkumar Chhanalal and his friend while watching the flooded river Khari noticed two or three boys trying to get the other side of the flooded river Shri Ashokkumar immediately jumped into the river with the intent to ensure safety to the youngsters but in the process he himself got swept away by the flooded river. Shri Kadiya Ashokkumar Chhanalal sacrificed his own life while trying to help others.

5. Shri Kanjibhai Valjibhai Gadhvi,
P.O. Sindhodi Moti, Taluka Abdasa,
Distt. Kachchh, Gujarat.

On 16th July, 1988, due to unprecedented rains, village Sindhodi was submerged under flood waters and many villagers were marooned. Shri Kanjibhai Valjibhai Gadhvi engaged himself in the task of rescuing the marooned persons. He rescued 14 children from their submerged huts and saved their lives.

Shri Kanjibhai Valjibhai Gadhvi showed courage and promptitude in saving the lives of 14 children unmindful of the risk involved to his own life.

6. Shri Sudhir Kumar,
Mohalla Dharog,
P.O. Chamba,
Distt. Chamba, Himachal Pradesh.

On 27th February, 1987, Shri Sudhir Kumar noticed a girl floating in the river Ravi. He immediately jumped into the river and rescued her. With the help of two guards he took her to the nearby hospital for treatment.

Shri Sudhir Kumar showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a girl unmindful of the risk to his own life.

7. Shri Ankuesh Ganapathi,
Kolankarm Chithakula,
Devabhag, Karwar, Karnataka.

8. Shri Ekanath Ganapathi Jopadekara,
Chithakula, Paiki,
Devabhag, Karwar, Karnataka.

9. Shri Ganapathi Soma Gavankar,
Majali, Karwar, Karnataka.

10. Shri Giridhara Ganapathi Jopadekara,
Chithakula,
Devabhag, Karwar, Karnataka.

11. Shri Pundlik Vishnu Sarang,
Kodibag, Karwar, Karnataka.

12. Shri Ramesh Rashoba Jopadekara,
Kodibag, Alvevada, Karwar, Karnataka.

On 24th August, 1988, a country boat 'Savitri' was caught in the turbulent currents at the confluence of Aghanashini river and the Arabian sea and sank alongwith 22 persons. On seeing this, the above mentioned persons who had gone to the sea for fishing in two boats, rushed to the spot and rescued the hapless victims who were drowing.

The above persons showed conspicuous courage, promptitude and concern for human life in saving the lives of 22 persons from drowning unmindful of the risk involved to their own lives.

13. Shri Ganapathi Govinda Harikanthra,
Aghanashini Kumta, Karwar District,
Karnataka.

14. Shri Mohana Nagappa Harikanthra,
Aghanashini Kumta, Karwar District,
Karnataka.

15. Shri Parameshwara Lakka Harikanthra,
Aghanashini Kumta, Karwar District,
Karnataka.

16. Shri Ramachandra Ghatta Harikanthra,
Aghanashini Kumta, Karwar District,
Karnataka.

On 27th August, 1988, 5 fishermen while returning after fishing in the Arabian sea were caught in the turbulent currents and their boat was sinking. On noticing this, the above mentioned persons who had also gone to the sea in a country boat for fishing, rushed to the spot and rescued the 5 fishermen from drowning.

The above persons showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 5 persons from drowning unmindful of the risk involved to their own lives.

17. Shri Damodar Mota Kharvi,
Sankrubhag, Karwar, Karnataka.

18. Shri Doddatamma Krishna Tandel,
Chendiye, Alligadda, Karwar, Karnataka.

19. Shri Ganapati Mika Thandel,
Binaga Killegab, Karwar, Karnataka.

20. Shri Mahadev K. Kamble,
Chendiye, Alligadda, Karwar, Karnataka.

21. Shri Mohan Krishna Tandel,
Sankrubhag, Karwar, Karnataka.

22. Shri Panduranga Chandra Tandel,
Chendiye, Alligadda, Karwar, Karnataka.

23. Shri Thaku Bhikashi Tandel,
Binaga Killegab, Karwar, Karnataka.

On 11th January, 1987, a country boat with 30 persons on board capsized in the middle of the sea near Anjadavi Island and all the persons fell into the sea. On seeing this, the above mentioned persons who were in another country boat immediately rushed to the spot, and rescued 28 persons at grave risk to their own lives. Two young boys lost their lives in the incident.

The above persons showed conspicuous courage, promptitude and concern for human life in saving the lives of 28 persons unmindful of the risk involved to their own lives.

24. Shri V. B. Shivakumar,
No. 1596, New No. 73, 1st Main Road,
Nagappa Block, Shrirampuram,
Bangalore-21.

On 1st September, 1987, an LPG gas cylinder exploded in a house in Shrirampuram and the neighbours Shri V. B. Shivakumar and his brother Shri V. B. Ravishankar rushed to the site. They informed the Fire Service and Police about the explosion and entered the house and rescued three children. While looking for other victims Shri Ravishankar stumbled and fell down from the 1st floor of the house and sustained serious head injuries.

Shri V. B. Shivakumar alongwith his brother showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three children unmindful of the risk involved to his own life.

25. Shri K. Bheemappa,
Deputy Commandant, Home Guards,
Gulbarga District, Gulbarga,
Karnataka.

On 24th June, 1988, one Shri S. R. Mitter accidentally fell into the Ulsoor Lake while relaxing against a parapet wall and started drowning. On hearing the hue and cry made by the people gathered there, Shri Bheemappa rushed to the spot and jumped into the lake. He swam about 60 feet, caught the victim and brought him ashore.

Shri K. Bheemappa showed conspicuous courage, presence of mind and promptitude in saving a precious life from drowning, unmindful of the risk involved to his own life.

26. Master Shivappa,
S/o Yellappa,
Shakhapur, Shakhapur Post,
Yelaburga Taluk, Raichur District.

On 2nd April, 1988, Kumari Savithramma, a 6 year old girl, accidentally fell into a 12 feet deep well while drinking water. On hearing the hue and cry of the people gathered there Master Shivappa, a 15 year old boy, rushed to the spot. He jumped into the well and rescued her.

Master Shivappa showed conspicuous courage, presence of mind and promptitude in saving the life of Kumari Savithramma from drowning unmindful of the risk involved to his own life.

27. Shri M. M. Babu,
Mathoor House,
Kulayithikkara,
P.O. Kanjiramattom, Kanayannoor Taluk,
Kottayam District, Kerala.

On 3rd October, 1988, Kumari Vidhya, a five year old girl accidentally fell into the Moovattupuzha river and was drowning. On hearing the hue and cry of the people gathered there, Shri M. M. Babu who happened to be there unhesitatingly jumped into the flooded river to save her. He rescued the girl and brought her ashore with the help of a fishermen.

Shri Babu showed conspicuous courage and promptitude in saving the girl from drowning unmindful of the great risk involved to his own life.

28. Shri Ramayyan Moniyan,
Vettuvilakamukinkuzhi Veedu,
Ezhamkal, Kovalam, Trivandrum District,
Kerala.

On 27th June 1988, four students were viewing the sea standing on the rocks at the Vizhinjam beach. A roaring wave suddenly pushed two of them into the sea and one drowned instantly. On hearing the hue and cry, Shri Moniyan rushed to the spot and jumped into the sea to save

the drowning boy With much difficulty he carried the struggling boy to the area where there was no attack of waves and waved for help He brought him ashore with the help of a fisherman

Shri Ramayyan Moniyan showed conspicuous courage, presence of mind and promptitude in saving the life of the student from drowning unmindful of the grave risk involved to his own life

29 Shri M P Raghava Kaimal
Mancheril , Gandhinagar P O
Kottayatm District Kerala

On 3rd August 1988 two students accidentally fell into the flooded Meenachil river while taking both On seeing this, Shri Raghava Kaimal immediately jumped into the river and rescued one of them He again jumped into the river to save the other boy but he could not succeed and the boy drowned

Shri Raghav Kaimal showed conspicuous courage, and promptitude in saving the life of a boy from drowning unmindful of the risk involved to his own life

30 Shri Vanchipuraackal Krishnan Venugopalan,
Vanchipuraackal,
P O Panangad,
Ernakulam District, Kerala

Shri Venugopalan, a Lascar in the KINCO boat service has saved the lives of six persons from drowning on four occasions On 4 2 84 he rescued a student who fell into the Mundampilly boat jetty On 7 8 88, he rescued two fishermen from drowning when their boat capsized in a severe storm On 8-9-88, he rescued two fishermen who fell into the Ernakulam backwaters when their boat capsized in a strong wind On 30-9-88, he saved the life of a 55 year old man who accidentally fell into the Vypeen ferry jetty

Shri Venugopalan showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of six persons from drowning on four occasions unmindful of the risk involved to his own life

31 Shri Durjan
C/o Sonadhar, Vill—Kavi Assna,
District Jagdalpur, M P

32 Shri Manglu,
C/o Mahadev Kurhka
Village Kurhkanar,
District Jagdalpur, M P

On 14th September, 1987, a boat with 54 persons on board capsized in a river in Bastar district and the lives of all were in great danger On hearing the news, Shri Manglu and Shri Durjan rushed to the site and rescued 30 persons Twenty four persons lost their lives in the mishap

Shri Manglu and Shri Durjan showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 30 persons unmindful of the great risk involved to their own lives

33 Master Vishnuprasad
Village Kochewahi, District Balaghat, M P

On 1st August 1988, Shri Vshnuprasad while grazing his cattle saw a man being carried away by the fast flowing waters of the flooded river Sone He immediately jumped into the river, swam towards the floating man and brought him ashore

Master Vishnuprasad showed conspicuous courage, promptitude and presence of mind in saving the life of a person from drowning unmindful of the risk involved to his own life

34 Shri Santosh Vasudeo Kadam,
At & Post Wagade, Tal Kankavali,
District Sindhudurg Maharashtra

On 17th July, 1988, Shri Shantaram Gangaram Chougule, while drivng his motor cycle through the flood waters, was caried away by the force of the flood waters On noticing this, Shri Santosh Vasudeo Kadam rushed to him and saved his life

Shri Santosh Vasudeo Kadam showed exemplary courage and promptitude in saving the life of a hapless man unmindful of the risk involved to his own life

35 Master Liansua
Kawlkulh Mizoram

36 Master Zohmingthanga
Kawlkulh, Mizoram

On 9th August 1988, Miss Lalrindiki, an eight year old girl, accidentally fell into a lake while playing in the school playground and the other children shouted for help On hearing the hue and cry, Master Liansua and Master Zohmingthanga rushed to the spot Master Liansua immediately jumped into the lake and after four dives he located the girl but due to exhaustion he could not retrieve the girl He described the location to Master Zohmingthanga, who promptly dived into the lake and rescued the girl

Master Liansua and Master Zohmingthanga showed conspicuous courage presence of mind and promptitude in saving the life of little girl from drowning unmindful of the risk involved to their own lives

37 Shri Kumulu Muduli
Village Muduliguda
P S Oikela,
Distt Koraput, Orissa

On 8th May, 1988, a country boat with 27 persons on board capsized in the midstream of Chitrakonda reservoir resulting in the death of 12 persons Shri Kumulu Muduli and 11 other passengers managed to reach the reservoir bank Shri Kumulu Muduli on reaching the reservoir bank noticed that three persons were struggling for their lives in the deep waters He without any hesitation swam upto the helpless persons and rescued them one by one

Shri Kumulu Muduli saved the lives of three persons from drowning at the risk of his own life

38 Shri Banshidhar Patri,
Peon, Dhabaleswar Bidyapitha
At/PO Mancheswar,
Distt —Cuttack Orissa

39 Shri Bidyadhar Parida
Headmaster, Dabaleswar Bidyapitha
At/PO Mancheswar,
Distt —Cuttack, Orissa

40 Shri Braja Kishore Mollick,
P E T Dhabaleswar Bidyapitha
At/PO, Mancheswar,
Distt —Cuttack, Orissa

On 8th March 1988, an Aircraft of Aviation Research Centre, Charbatia crashed at the open field very close to Dhabaleswar High School Seeing the burning aircraft and sensing the danger S/Shri Patri, Parida and Mollick took prompt action by pushing about 70 students out of the school through the windows and evacuated them to safety

S/Shri Banshidhar Patri, Bidyadhar Parida and Braja Kishore Mollick showed courage, promptitude and presence of mind in evacuating the students to safety

41 Shri Amarchand Prajapati,
Nahar Singh Colony, Ratanada
Jodhpur, Rajasthan

On 28th June 1986, a fire broke out at a house in Nahar Singh Colony Jodhpur and two children received burn injuries A Police Party accompanied by some residents made their way into the house carrying a chimney lamp to conduct investigation All of a sudden fire broke out with a burst and engulfed the house and the lives of many persons were in peril as clothes of many of them caught fire Shri Amarchand Prajapati who was also inside the burning house showed great courage and presence of mind in preventing the fire from spreading and in the process himself received severe burn injuries

Shri Amarchand Prajapati displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of many persons from fire, unmindful of the grave risk involved to his own life

42 Shri Chander Prakash,
Railway Station, Thana Gopalpura
Sawai Madhopur, Rajasthan

On 30th January, 1988, Miss Sita, 13-year old girl accidentally fell into a well while trying to evade a charging cow and shouted for help. Hearing this, Shri Chander Prakash immediately jumped into the 35-feet deep well to save her. With the help of a big rope lowered into the well by people gathered there, he brought her out safely.

Shri Chander Prakash showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of a girl from drowing unmindful of the risk involved to his own life.

43. Shri Kaluram Khatik.
C/o Govt. Upper Primary School,
Malka Khera (Mandalgarh),
Distt.—Bhilwara, Rajasthan.

On 25th January, 1988 one Shri Bholu accidently came into contact with a live wire and got stuck to it. He was unconscious and was on the brink of death. On seeing this, Shri Kaluram Khatik, who happened to be there, immediately took a wooden plank lying nearby and pushed the victim away from the live wire. He immediately took the unconscious victim to the nearby, hospital for treatment.

Shri Kaluram Khatik showed conspicuous courage, promptitute and presence of mind in saving the life of a person unmindful of the risk involved to his own life.

44. Shri Suresh Chand Pant,
Village Chitgal, Patwari Area,
Choupath, Tehsil and Distt. Pithoragarh, U.P.

On 19th July, 1988 at Kothera, a truck met with an accident and all the occupants were trapped inside, and were injured. Shri Suresh Chand Pant, though himself injured, showed courage and great concern for human life and brought the hapless victims out.

Shri Suresh Chand Pant displayed courage, promptitude and concern for human life in rescuing the hapless victims of the accident.

45. Shri Ratan Singh Hautiyal,
Resident of Pangu,
P.O.—Pangu,
Tehsil—Dharchula,
District Pithoragarh, U.P.

On 21st December, 1987, at midnight, the Punetha Bhawan at Lohaghat caught fire and eight shops were reduced to ashes. Shri Ratan Singh Hutiyal alongwith some local youths valiantly fought the fire for three hours and successfully controlled it. But for his timely action many lives would have been lost.

Shri Ratan Singh Hautiyal, alongwith others youths, showed conspicuous courage and promptitude in controlling the raging fire.

46. No. 14258595 Lance Naik Rajesh Kumar,
1, Armoured Division,
Signal Regiment, C/o 56 APO.

On 15th June, 1987, a private bus carrying about 80 passengers fell into Bhakra Main Canal. On hearing the news, Lance Naik Rajesh Kumar rushed to the spot. He saw the bust conductor trying to rescue a lady but was unable to succeed due to fast current. Lance Naik Rajesh Kumar immediately jumped into the canal and rescued her. Then he saw a child floating in the middle of the canal. He immediately jumped into the canal and rescued the child also. He then took both the victims to the nearby hospital for immediate treatment.

Lance Naik Rajesh Kumar showed conspicuous courage, promptitude and concern for human life and saved two lives from drowning at grave risk to his own life.

47. No. 3980241K Sepoy Lekh Raj,
14 Dogra Regiment,
C/o 56 APO.

On 27th August, 1987, an Army Patrol party was crossing a nallah with the help of a rope and a member of the party Sepoy Chander Mohan got injured and fell into the nallah. On seeing this, another member of the patrol party Sepoy Lekh Raj rushed to his rescue He jumped into the nallah and pulled him out.

Sepoy Lekh Raj showed conspicuous courage, presence of mind and promptitude in saving the life of Sepoy Chander Mohan unmindful of the grave risk to his own life.

48. GO-1808X Assistant Engineer,
Tarsem Lal,
Village—Sundrawal,
PO—Chandian Khurd,
Distt. Hoshiarpur (Punjab)

On the night of 18th October, 1987, due to unprecedented snowfall, 800 casual labourers were stranded in freezing cold at a height of 3169 mtrs. near Manali—Sarchu—Leh Road. On hearing the news Shri Tarsem Lal, an Assistant Engineer of 394 Rd. Maintenance Platoon of Project Deepak started the rescue operations of 21st October, 1987. He reached the site and found that many stranded men were totally exhausted and unable to walk. He lifted an exhausted labourer on his shoulders and brought him safely to the camp. Then he led more men from the camp to rescue the stranded men.

Shri Tarsem Lal showed conspicuous courage and dedication to duty in rescuing the stranded labourers at great risk to his own life.

49. No. 2763555P Havildar Vinayak Panase,
6, Maratha LI, C/o 56 APO.

50. No. 3377422 Sepoy Gurmeet Singh,
10 Sikh Regiment, C/o 56 APO.

51. 3380223X Sepoy Jagtar Singh,
10 Sikh Regiment, C/o 56 APO.

On 24th April, 1987, a massive awaalanche struck the New Camp Iwala Post in Siachen Glacier trapping thirty eight personnel Havildar Vinayak Panase, Sepoy Gurmeet Singh and Sepoy Jagtar Singh who were at the neighbouring post organised the rescue operation. They dug a tunnel through the pile of 20 to 25 feet snow and managed to extricate the trapped personnel to safety.

The above gallant jawans showed conspicuous courage, promptitude and concern for human life in saving the lives of 38 personnel buried under the snow.

52. No. 9922518 Sepoy Chhering Dorje,
High Altitude Warfare School,
C/o 56 APO.

53. No. 9922127 Sepoy Chethan Mutup,
High Altitude Warfare School,
C/o 56 APO.

On 27th May 1987, a paratrooper fell into the river Sindh while negotiating a wooden bridge On hearing the resultant hue and cry, Sepoy Chhering Dorje and Sepoy Chethan Muthup rushed to his rescue. Sepoy Chethan Mutup jumped into the river and caught hold of the hapless victim but he could not bring him ashore as the ice cold water benumbed his body. He, with firm determination, held on to the victim and shouted for help. On this Sepoy Dorje plunged into the river and reached there. Both the valiant jawans with great difficulty managed to bring the victim ashore.

Sepoy Chhering Dorje and Chethan Mutup showed courage and determination in saving the life of the paratrooper unmindful of the great risk to their lives.

54. Major Rajinder Singh Kutlehria,
9 Mahar Regiment, C/o 99 APO.

On 31st July, 1987, Doctor M. Fanne, a member of the Indo-French expedition team to scale Mt. Kailash slipped and fell into a mountain stream and was drifting away due to fast current. Major R. S. Kutlehria, the Liaison Officer of the team saw this and immediately jumped into the stream to save him. He brought the unconscious victim ashore and gave him first aid.

Major R. S. Kutlehria showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of the French mountaineer unmindful of the great risk to his own life.

55. No. 145373977 K Gunner Ramesh Chander Chauhan,
1861 Light Regiment (Arty.),
C/o 56 APO.

On 25th June, 1987, Constable Puran Chand of SPF while trying to negotiate a rope bridge, slipped and fell into the river. He was being swept away in the fast current. On seeing this, Constable Avdesh Kumar immediately jumped into the river to rescue him but he was also being swept away in the fast current. Fortunately, Constable Puran Chand managed to get hold of something and got out but Constable Avdesh Kumar was in deep trouble. Sensing the danger ,Gunner Ramesh Chander Chauhan tied a nylon rope on his waist and jumped into the river to save Constable Avdesh Kumar. He could successfully during him ashore, but unfortunately Constable Avdesh Kumar was by then dead.

Gunner Ramesh Chander Chauhan showed conspicuous courage, promptitude and concern for human life in making brave efforts to save a life unmindful of the risk to his own life

56 01285 Lt. Cdr. Suresh Kumar Chauhan,
INS Circars, Naval Base,
Visakhapatnam.

On 9th July, 1987, Dakshin Express met with a serious accident near Mancheriyal Railway Station and a few bogies were washed away and some of them overturned Lt. Cdr S. K. Chauhan who was travelling in the I class Bogie, which was completely overturned, came out of the bogie, with great difficulty. He noticed that 5 people were trapped in their compartment. He re-entered the bogie and rescued the hapless persons

Lt. Cdr. Chauhan showed conspicous courage and promptitude in rescuing the trapped passengers unmindful of the risk involved to his own life.

57 G/162962F Supdt. B/R Gde II Salim Shah M 383
Road Maintenance Plantoon (GREF),
Care 63 Road Construction Company (GREF),
C/o 99 APO

58. Code No. 1607 Baidar Kancha Lama,
467 Road Maintenance Platoon (GREF),
C/o 63 Road Construction Company (GREF)
C/o 99 APO

On 28th December, 1987, a Toyata Ambulance car carrying six patients skidded down the valley on Tashigang-Wandiphorang Road On receiving the information Supdt. B/R Gde. II Salim Shah and Baidar Kancha Lama, with utter disregard to their personal safety, descended down the valley and rescued five injured occupants of the ambulance car. They also recovered the body of the sixth occupant who lost her life.

Supdt. Salim Shah and Baidar Kancha Lama showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of five persons unmindful of the grave risk involved to their own lives

59. Shri Manoj Kumar Singh,
C-741, New Friends Colony,
New Delhi.

60 Shri Alexander Thomas,
1046, Sec-IV, R K. Puram
New Delhi

On 29th June, 1987, a devastating fire broke out in the 12th floor of Ansal Bhawan, New Delhi and many people were trapped inside the burning building. S/Shri Manoj Kumar Singh and Alexander Thomas, who were at the site of the incident, plunged themselves into the rescue operations. They built a make-shift bridge between Ansal Bhawan and Ambadeep building and rescued 50 persons

S/Shri Manoj Kumar Singh and Alexander Thimas showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of 50 persons unmindful of the risk involved to their own lives

A. K. UPADHYAY
Director

## MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Dehi, the 27th March 1990

No. 20012/4/88-Hindi II.—In continuation of this Ministry's Resolution No. 20012/4/88-Hindi II dated 25 November, 1988, Govt. of India nominate the following Members of Parliament as non-official Members of Hindi Salahakar Samiti of the Ministry of Home Affairs :—

1. Sh. Jai Prakash, Member of Parliament (Lok Sabha).
2 Sh Surya Narayan Singh, Member of Parliament (Lok Sabha)

### ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to the Members of the Samiti, President's Secretariat, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Office, Comptroller and Auditor General of India, the Lok Sabha Secretariat and the Rajya Sabha Secretariat.

ORDERED also that Resolution be published in the Gazette of India for general information.

B S. SEHGAL, Dy. Secy.
and Member Secy.,
Hindi Salahakar Samiti

## MINISTRY OF INDUSTRY

### (DEPARTMENT OF COMPANY AFFAIRS)

New Delhi, the 19th March 1990

No. 27/11/90-CL. II.—In exercise of the powers conferred by clause (ii) of sub-section (1) of section 209A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) the Central Government hereby authorise Shri T. Pandian, Asstt. Inspecting Officer in the Department of Company Affairs for the purpose of the said section 209A.

The 27th March 1990

No. 27/11/90-CL.II.—In exercise of the powers conferred by clause (ii) of sub-section (1) of Section 209A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) the Central Government hereby authorise Shri Anil Mohan Singh, Asstt. Inspecting Officer in the Department of Company Affairs for the purpose of the said section 209-A.

M. L. SHARMA, Under Secy.

## MINISTRY OF AGRICULTURE

### (DEPARTMENT OF AGRICULTURE & COOPERATION)

New Delhi, the 14th March 1990

### RESOLUTION

No. 12-1/90-IP-ES/EA.—Recognising the critical importance of agricultural development for the welfare and prosperity of the rural masses, Govt. have decided to accord the highest priority to the formulation of a new agriculture policy. The implementation of this policy will also be constantly monitored for systematic development of the agricultural sector and the fruits of such development flowing to all sections of the community, more particularly to the rural masses.

2. In tune with the firm commitment to participatory form of Government, it has been decided to appoint a Standing Advisory Committee consisting of representatives of the farming community to assist and advise the Government on a continuing basis in the matter of formulation and implementation of the agriculture policy.

3. The Standing Advisory Committee will consist of following eminent persons :

Chiarman

(1) Shri Sharad Joshi

Members

(2) Shri Bhanu Pratap Singh
(3) Shri V. Sobhanadreeswara Rao
(4) Dr. Kishan Kanungo
(5) Shri Kumbha Ram Arya
(6) Shri Virendra Verma
(7) Shri Jagjit Singh Ghungrana

4. The tenure of the members will be for a period of 3 years from the date of this order. The members are eligible for re-nomination.

5. The Ministry of Agriculture would regularly interact with the Committee and seek its views on important matters of policy such as the development strategy for agricultural sector including such activities as Aanimal Husbandry, Fisheries, Horticulture, etc. availability of various inputs including credit, supportive services like prices, marketing, warehousing, and such other facilities which have a vital bearing on agricultural development.

6. The dialogue with the Committee would assist the Ministry of Agriculture in formulating important proposals for consideration by Planning Commission, Ministry of Finance and others concerned. The Committee will also advise the Ministry of Agriculture on such other matters, as referred to it, relating to the development of agriculture

7. The Economic and Statistical Adviser, Department of Agriculture and Cooperation, will be non-Member Secretary of the Advisory Committee and will render all necessary assistance to it.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all the Ministries and Departments of the Government of India, all the State Governments, and Union Territories, Planning Commission, Cabinet Secretariat, President's Secretariat, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Prime Minister's office, Comptroller & Auditor General of India and all Attached nad Subordinate Offices under the Ministry of Agriculture (Department of Agriculture and Cooperation).

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. RAJAN, *Jt. Secy.*

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1990